प्रतिदिन

निवेश बढ़ाना होगा

भारतीय शेयर बाजार में लगातार गिरावट पर चिंता स्वाभाविक है. शुक्रवार को बॉम्बे शेयर बाजार के शेयर सूचकांक में 800 अंकों की गिरावट देखी गई है. अगर सप्ताह की बात करें, तो यह सप्ताह गिरावट के नाम रहा है. निवेशकों को पूरे सप्ताह नुकसान का सामना करना पड़ा है. सेंसेक्स में 3,700 अंकों की गिरावट को कम नहीं समझना चाहिए. निफ्टी अपने निचले स्तर पर ही चल रहा है और अकेले शुक्रवार को उसमें 250 अंकों की गिरावट हुई है. टीसीएस, रिलायंस, इंफोसिस, एक्सिस और एचडीएफसी बैंक जैसी महत्वपूर्ण कंपनियों के शेयरों में गिरावट की वजह से ही बाजार ज्यादा प्रभावित हुआ है. जब बड़ी कंपनियों के शेयर भाव घटने लगते हैं, तब दूसरी अनेक कंपनियों के शेयर पर भी नकारात्मक असर पड़ता है. चिंता यह होने लगी है कि साल का आखिरी सप्ताह शुरू होने वाला है और अगर भारतीय शेयर बाजारों में गिरावट का क्रम जारी रहा, तो अर्थव्यवस्था के लिए यह अच्छी बात नहीं है. वैसे भी यह कई लोगों के लिए छुट्टियों का समय है, वे क्रिसमस मनाने और साल को विदा करने की तैयारी में लगे निवेशक बाजार में जोखिम लेना नहीं चाहेंगे.

गिरावट का सबसे बड़ा कारण यह बताया जा रहा है कि अमेरिका के केंद्रीय बैंक की ब्याज दरों में कम कटौती की संभावना है. कटौती अगर कम होती है, तो अमेरिकी निवेशकों के पास भारतीय बाजारों में निवेश के लिए धन कम पड़ने लगेगा. अमेरिकी अर्थव्यवस्था में सुधार के संकेत हैं, अमेरिकी डॉलर के मजबूत होने से भी भारत से बाहर जा रही पूंजी की मात्रा बढ़ी है. अमेरिकी निवेशकों के बारे में यह कहा जाता है कि अगर उन्हें अपने देश में ही फायदा दिखे, तो वे विदेश का रुख नहीं करते हैं. जब उन्हें देश में नुकसान की आशंका होती है, तभी वे पैसा बचाने और बनाने के लिए भारत जैसे देशों की ओर देखते हैं. ध्यान देने की बात है कि विदेशी संस्थागत निवेशकों ने भारतीय शेयर बाजारों के पिछले चार सत्र में ही 12,000 करोड़ रुपये से अधिक के भारतीय शेयर बेच दिए हैं. अब सवाल यह है कि भारत से पूंजी प्रवाह का क्रम कैसे रुक सकता है? एक ही उपाय है कि घरेलू अर्थव्यवस्था को मजबूत किया जाए, लेकिन फिलहाल घरेलू अर्थव्यवस्था ने बाजार की चिंता बढ़ा दी है. भारतीय अर्थव्यवस्था की स्थिति को अगर डॉलर के मूल्य से मापा जाए, तो हमारा रुपया अमेरिकी डॉलर के मुकाबले अपने सबसे निचले स्तर पर है. यह भी संकेत मिल रहा है कि लगातार तीसरी तिमाही में भारतीय विकास दर अनुमान के मुताबिक नहीं रही है भारतीय अर्थव्यवस्था के कर्णधारों को सोचना पड़ेगा कि उत्पाद में सुधार की ज्यादा जरूरत है या सेवा में? दोनों ही क्षेत्रों में भारत का प्रदर्शन दुनिया के ज्यादातर देशों से अच्छा रहा है. आगे भी हमारी स्थिति अच्छी रहे, इसके लिए ज्यादा उपाय आजमाने की जरूरत महसूस होने लगी है. हमें किसी अन्य देश से तुलना करने के बजाय अपने प्रदर्शन में स्वयं सुधार करना चाहिए. अगर बड़े उद्योग और बड़े उद्योग क्षेत्र तेजी से विकास नहीं कर रहे हैं, तो इसके लिए क्या कदम उठाए जा सकते हैं? हमारी अर्थव्यवस्था अगर घरेलू मोर्चे पर मजबूत रही, तो विदेशी निवेश स्वाभाविक ही आएगा. प्राथमिक रूप से हमें स्वदेशी निवेश को सुनिश्चित करना होगा. अगर अर्थव्यवस्था में मांग घट रही है, तो उसे बढ़ाने के उपाय किए जाएं और ऐसे उपाय पहले भी सफलतापूर्वक आजमाए गए हैं.

मर्यादा भूलते हमारे माननीय

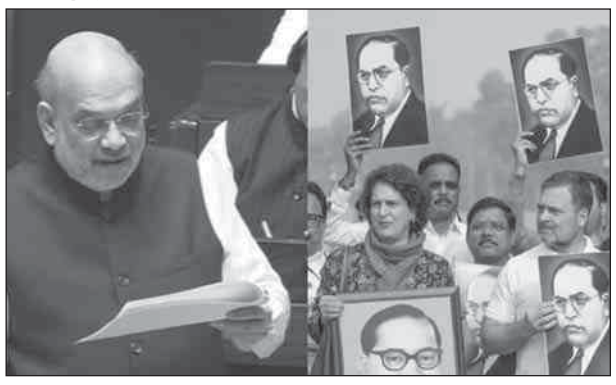

ऐसा लगता है, जैसे हम लोग राजनीतिक प्रक्रिया का सर्वोच्च आदर्श देखने के बजाय एक ऐसी फिल्म देख रहे हैं, जिसमें रोमांच विहीन नफरत है. क्या कमाल है? विपक्ष तो आरोप लगाता ही है, पर जो सत्ता में हैं, वे भी आरोप ही अलापते हैं. यह तू-तू, मैं-मैं का सिलसिला कब बंद होगा?

शीतकालीन सत्रके समापन से एक दिन पूर्व संसद भवन के मकर द्वार पर जो हुआ, वह अकल्पनीय था. सत्ता पक्ष का आरोप है कि प्रतिपक्ष के नेता राहुल गांधी और उनकी अगुवाई में प्रदर्शन कर रहे कांग्रेसी सांसदों के धक्के से उनके दो लोकसभा सदस्य घायल हो गए और उन्हें अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा. इसके विपरीत, कांग्रेस का आरोप है कि भारतीय जनता पार्टी के सदस्यों ने न केवल उनका रास्ता रोका, बल्कि राहुल गांधी और मल्लिकार्जुन खरगे को जबरदस्ती पीछे धकेलने की कोशिश की. इस धक्का-मुक्की से 82 वर्षीय बुजुर्ग खरगे के पैर में चोट आई है. दोनों पक्षों ने शिकायतें दर्ज करा दी हैं. मामला लोकसभा अध्यक्ष के अलावा संसद मार्ग थाने तक पहुंच गया है.तय है, बात निकली है, तो दूर तलक जाएगी. दोनों ही पक्ष अपने-अपने तरीके से बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर के नाम को भुनाने की कोशिश करेंगे. बाबा साहेब का नाम एक वर्ग विशेष के वोट दिलाने वाला जो साबित होता है.इस सिलसिले में विस्तार से चर्चा के पहले घटना का संक्षिप्त ब्योरा. बुधवार को गृह मंत्री अमित शाह ने राज्यसभा में अपने वक्तव्य में डॉ आंबेडकर का जिक्र किया था. इस पर मल्लिकार्जुन खरगे का कहना था कि उन्होंने बाबा साहेब का अपमान किया. खरगे के उस ट्वीट ने वही काम किया, जो सूखे जंगल में चिनगारी करती है. देखते-देखते हर विपक्षी नेता ने अपने-अपने तरीके से गृह मंत्री के शब्दों की व्याख्या करनी शुरू कर दी. दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने तो जनता दल(यू) के नीतीश कुमार और तेलुगु देशम पार्टी के अगुवा चंद्रबाबू नायडू को पत्र लिखकर मांग तक कर डाली कि वे आंबेडकर का अपमान करने वालों से खुद को अलग करें.

यह सब तब हो रहा था, जब खुद अमित शाह और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपना मंतव्य स्पष्ट कर चुके थे. राजनीति से वे दिन विदा हो गए हैं, जब कोई नेता अपने मन की बात सामने रखता था और दूसरा उसके मर्म को समझने का प्रयास करता था.जिन बाबा साहेब आंबेडकर के नाम पर यह हंगामा बरपा है, वह खुद सहनशीलता की मिसाल थे. ऐसा न होता, तो आंबेडकर उसी समय बोरिया-बिस्तर समेटकर अमेरिका रवाना हो गए होते, जब बड़ौदा में उन्हें एक पारसी सराय से धक्के मारकर सिर्फ इसलिए निकाल दिया गया था, क्योंकि वह दलित थे. यह हाल तब था, जब आंबेडकर को बड़ौदा के महाराज का राज्याश्रय प्राप्त था. इसके बावजूद पूरे शहर में कोई उनको अपना आवास देने को तैयार न था. नाम बदलकर वह उस सराय में ठहरे थे, लेकिन उनकी जाति छिपी न रह सकी और फिर लाठी-डंडों से लैस पारसियों के झुंड ने सराय पर हमला बोल दिया. डॉ. आंबेडकर को अपना सामान और पुस्तकें समेटकर सारी रात एक पार्कके कोने में गुजारनी पड़ी थी.

इतने बड़े अपमान के बावजूद उन्होंने पारसियों से नहीं, बल्कि हमेशा उस व्यवस्था से लड़ने की कोशिश की, जो मनुष्य को मनुष्य से जुदा करती है. यही वजह है कि उनके निधन के 68 वर्ष बाद आज हमारे माननीय अपने-अपने तरीके से उन पर हक जताने की कोशिश कर रहे हैं. ऐसा करते वक्त वे यह भूल गए हैं कि खुद उनके तौर-तरीकों को बाबा साहेब कभी जायज नहीं ठहरा सकते थे.

हमारे माननीय सुविधापूर्वक भूल जाते हैं कि उनके मतदाताओं ने उन्हें इस आचरण के लिए नहीं चुना था. वोट डालते समय लोग अपनी भलाई और विकास चाहते हैं. क्या उन्हें यह हासिल हो पा रहा है? रोजगार, जलवायु, सीमा सुरक्षा, आंतरिक सुरक्षा, महिलाओं का सम्मान और सभी वर्गों के समान विकास जैसे मुद्दों पर कभी आपने संसद में कोई गंभीर चर्चा सुनी है? एक समय था, जब मैं खुद लोकसभा और राज्यसभा टेलीविजन पर 'डिबेट्स' को लाइव सुना करता था. हालांकि, उस समय ऐसे लोग थे, जो कहते थे कि अब संसद में पहले जैसे बोलने वाले नहीं रहे. इसके बावजूद अटल बिहारी वाजपेयी, सुषमा स्वराज, चंद्रशेखर, लालू यादव, जावेद अख्तर आदि अपने-अपने तरीके से आम आदमी की बात रखते थे.

पिछले कुछ वर्षों से यह सिलसिला बाधित हो गया है. ऐसा लगता है, जैसे हम लोग राजनीतिक प्रक्रिया का सर्वोच्च आदर्श देखने के बजाय एक ऐसी फिल्म देख रहे हैं, जिसमें रोमांच विहीन नफरत है। क्या कमाल है? विपक्ष तो आरोप लगाता ही है, पर जो सत्ता में हैं, वे भी आरोप ही अलापते हैं. यह तू-तू, मैं-मैं का सिलसिला कब बंद होगा? हमारी संसद की एक दिन की कार्यवाही लगभग नौ करोड़ रुपये की बैठती है

. इतने में तो किसी एक गांव या मुहल्ले में बाधित पड़े जन विकास के तमाम काम पूरे हो जाएंगे. हमारे 'माननीय' कभी इस साधारण से मुद्दे पर भी विचार कर देखें, जनता ने इसीलिए तो उन्हें चुनकर वहां भेजा है. एक बात और, चाहे भगवान श्रीराम हों, महात्मा गांधी हों या डॉ. भीमराव आंबेडकर. हर वह अवतार या शख्सियत, जो वोट दिलवा सकती है, इस संसद के हंगामेपूर्ण विमर्श का विषय बन जाती है. क्या कभी इनमें से किसी एक ने उनके आदर्शों पर चलने की ठानी है? आंबेडकर और गांधी में विरोध था, लेकिन इसके बावजूद गांधी और नेहरू ही थे, जिन्होंने उनसे अनुरोध किया था कि वह संविधान की 'ड्राफ्टिंग कमिटी' के चेयरमैन का पद स्वीकार करें.

याद रखें, गांधी और आंबेडकर अलग-अलग चलते हुए दिखाई पड़ते थे, लेकिन दोनों का मकसद एक ही था. आंबेडकर दलितों का संपूर्ण उद्धार चाहते थे. गांधी इस वर्ग के प्रति सदियों पुराना भेदभाव मिटाने के लिए दलित बस्तियों में ठहरते थे. उन्होंने हरिजन नाम का अखबार भी निकाला था. हालांकि, आंबेडकर इसे प्रतीकात्मक कहते थे, परंतु उन्हें क्या मालूम था कि आने वाले वर्षों में नाटकीय प्रतीकवाद मूल मुद्दों की जगह ले लेगा? मैं यहां कांग्रेस के सदस्यों की मंशा पर सवाल नहीं उठा रहा, लेकिन यह सच है कि राहुल गांधी और प्रियंका गांधी जब नीले कपड़े पहनकर संसद में आए, तब उन्होंने एक निश्चित वर्ग को संदेश देने की कोशिश की. इससे उस वर्ग का कितना भला होना था? वैसे ही, जैसे प्रियंका गांधी वाड्रा एक दिन फलस्तीन, तो दूसरे दिन बांग्लादेश लिखा हुआ बैग टांगकर संसद पहुंचीं.

इससे वह तो चर्चा में आ गईं, लेकिन उन देशों की जनता का क्या भला हुआ?अंत में, भारतीय लोकमानस के अनंतिम नायक श्रीराम का एक उदाहरण. रामचरितमानस में राम के राज्याभिषेक का जबरदस्त प्रसंग है. राम सत्ता सम्हालते वक्त अयोध्यावासियों से अनुरोध करते हैं कि, आप यदि मेरे द्वारा किए गए फैसलों में कोई गलती पाएं, तो मुझे टोकने का अधिकार आपके पास होगा. क्या हम और आप अपने माननीय सांसदों में किसी एक को भी टोकनेका हक-हुकूक रखते हैं? हमारा लोकतंत्र इतना सहमा और संकुचित क्यों है?

शशि शेखर

मैं जो कूछ भी कहूंगी..

तुम रूठे रहो...

महाराष्ट्र की समझदार और धर्म प्रेमी जनता ने महायुति को दिलो जान से चुनकर दिया. इस बार महाविकास आघाड़ी के साथ पूरा *'खेला'* हो गया, क्योंकि यह लड़ाई धर्म की थी इसलिए कोई समझौता नहीं हुआ. निःसंदेह मुख्यमंत्री की कुर्सी पर देवा भाऊ का ही हक था, जो उन्हें मिला. तीन पक्षों की दोस्ती की जीत हुई. कुछ मित्र पक्ष भी साथ खड़े हुए.

मंत्रिमंडल की स्थापना और मंत्री पद सबसे बड़ी समस्या बनी, क्योंकि सभी को न्याय देना सद्भावना होकर भी संभव नहीं था. बीजेपी ने किसी भी पक्ष में हस्तक्षेप नहीं किया और सर्वस्व अधिकार संबंधित प्रमुखों को दे दिया. विचार मंथन के बाद मंत्रियों की सूची बनी. जाहिर था सबको मौका कैसे मिलता? कुछ नये, कुछ पुराने, लोगों को लेकर मंत्री पदों का वितरण हुआ और यहीं से प्रारंभ हुआ रूठने का नाटक.

अपना अधिकार सिद्ध करते हुए, कई लोगों ने अपनी नाराजगी व्यक्त की, तो किसी ने अपना दर्द छुपा लिया. रुठने वालों में कई दिग्गज नेता भी हैं, जैसे छगन भुजबल, शिवतारे वगैरे... सदा भाऊ और गोपीनाथ पडलकरजी, इन्होंने अपनी नाराजी बहुत ही तरीके से व्यक्त की और जनता के दिलों पर छा गए, लेकिन छगन भुजबल और शिवतारे जैसे जेष्ठ और उम्र दराज नेताओं का रूठना गैरजरूरी मालूम होता है. जब तक पुराने हटेंगे नहीं, तब तक नये आएंगे कैसे? पर भुजबल साहब को पक्ष बदलने की इतनी आदत है कि वे अक्सर यही गाते हैं कि *'एक घर बनाऊंगा - तेरे घर के सामने'* इस बार की सरकार स्थिर है, दो-चार इधर-उधर हो भी गए तो कोई फर्क नहीं पड़ेगा.

आश्चर्य हुआ तो सुधीर भाऊ का, उनके जैसे समझदार नेता से इस नाटक की उम्मीद नहीं थी. वह बीजेपी के शिस्त और स्वभाव दोनों को जानते हैं. थोड़ा संयम रखना जरूरी था. श्रद्धा और सबुरी बीजेपी के लोकप्रिय मंत्र हैं. इसलिए अन्य के उदाहरण आंखों के सामने रखते हुए सुधीर भाऊ को संयम से काम लेना चाहिए था. शीर्षस्थ नेताओं की नजर सब पर होती है. इसलिए कोई कमजोर कड़ी हाथ में जरूर लगी होगी. पक्ष के विरुद्ध काम करना बीजेपी को बिल्कुल पसंद नहीं. जो रूठे हुए हैं उनमें उतावलापन ज्यादा है. दिल्ली में बैठे नेता की घाघ नजर सब पर होती है, इसलिए जो दोस्त हैं उन्हें योग्यता अनुसार अवार्ड जरूर देते हैं इसलिए थोड़ी शांति रखनी चाहिए.

कड़वी सच्चाई यह है कि, सामान्य जनता ने किसे मंत्री पद देंगे? किसे नहीं? यह सोचकर इस बार मतदान बिल्कुल नहीं किया. उन्हें वही लोग इस बार चाहिए थे, जो हिंदुत्व और सनातन धर्म की रक्षा करें, राष्ट्रहित की बात करें, आप मंत्री बनते हैं या नहीं? सामान्य जनता को इससे कोई लेना देना नहीं. दो-चार आपके चमचे होते हैं जो होर्डिंग वगैरा लगा देते हैं वह भी आपके ही पैसों से, जनता ने तो आपके सामने विरोधी पक्ष भी नहीं रखा. लो भाई, खुलकर करो धर्म की रक्षा अब अगर कोई पद के लिए या अपने स्वार्थ सिद्धि के लिए रूठे हुए हैं, जनता उन्हें बहुत ध्यान से देख रही है. *बिना पद या कुर्सी के क्या जनसेवा नहीं हो सकती? गाड़गे बाबा, तुकडोजी महाराज यह कौन से मंत्री पद पर थे*? या कुर्सी पर थे? आपके क्षुद्र स्वार्थ जनता देख रही है, इस बार बड़ों-बड़ों को धूल चटा दी तो आप क्या हैं?

शांति से, संयम से, समय की प्रतीक्षा करने वाले, अभी भी पालक मंत्री बन सकते हैं. इसलिए 'कूल' रहें.

बीजेपी में जिसके प्रति मन में गांठ बन जाती है उसे किस प्रकार जमीन पर लाना है? यह बात चाणक्य अच्छी तरह जानते हैं. इसलिए रास्ता भटकना मत, पद और प्रतिष्ठा आपके कर्मों से और निःस्वार्थ जनहित से ही मिलती है. महायुति के तीनों नेता सक्षम हैं, उन पर भरोसा करना चाहिए. क्या पता निकट भविष्य में ही कुछ अच्छा घट जाए और फिर जनता तो सबकी राजा है, वह बहुत ध्यान से देख रही है कि कौन कैसा पैंतरा चल रहा है? कौन-कौन सी चाल चल रहा है? उसे सब मालूम है.इसलिए इस बार हिंदुत्व के नाम पर जनता ने वोट दे दिया अगली बार शायद आपके जैसे आए -ना - आएं? क्या भरोसा? जनता ने जिस प्रकार महायुति को बंपर जीत दिलवाई है. उससे तो यही लगता है कि *'तुम रूठे रहो, तो रूठे रहो, मनाने कोई नहीं आएगा.*

आज तो मुख्यमंत्री भी चतुर, संयमी, मित भाषी और *नीलकंठ देवाभाऊ हैं,* जो कल तक उन्हें कोस रहे थे, आज उनके चौखट पर हैं. इसलिए रूठना छोड़िए और जनता के काम धंधे से लग जाइए. बेवफा कुर्सी के लिए विरह गीत गाना ठीक नहीं है... प्रो.

ज्योति व्यास, अमरावती.

'संडे हो या मंडे, कभी न खाओ अंडे'

क्या अंडे शाकाहारी हैं

सच्चाई यह है कि अंडे दो प्रकार के होते हैं एक वे जिनसे बच्चे निकल सकते हैं तथा दूसरे वे जिनसे बच्चे नहीं निकलते. मुर्गी यदि मुर्गे के संसर्ग में न आए तो भी जवानी में अंडे दे सकती है.

ज्ञापन जगत ने आम जनता के मन में एक बात बिठा दी है कि अंडे शाकाहारी नहीं हैं. अंडे का उपयोग बढ़ाने के लिए इसे प्रोटीन का बढ़िया स्रोत बताया जाता है. प्रोटीन की मात्रा बहुत सारी शाकाहारी चीजों में भी काफी ज्यादा है पर इस विवाद में नहीं भी पड़ा जाए तो यह तथ्यात्मक रूप से गलत है कि अंडा शाकाहारी है. इसलिए शाकाहारियों के लिए अंडे को लोकप्रिय बनाने के लिए किए जाने वाले प्रचार का उल्टा नारा लगाया जा सकता है - 'संडे हो या मंडे, कभी न खाओ अंडे'. कोई क्या खाए और क्या नहीं इसमें बहुत कुछ आदमी की अपनी पसंद और जीवनशैली के साथ-साथ कई अन्य बातों पर निर्भर करता है. फिर भी आप जो चीज खाते हैं या किसी कारण से नहीं खाते हैं उसके बारे में आपको आवश्यक जानकारी अवश्य होनी चाहिए. सरकारी आंकड़ों के अनुसार 100 ग्राम अंडों में जहां 13 ग्राम प्रोटीन होगा, वहीं पनीर में 24 ग्राम, मूंगफली में 31 ग्राम, दूध से बने कई पदार्थों में तो इससे भी अधिक एवं सोयाबीन में 53 ग्राम प्रोटीन होता है. यही तथ्य कैलोरी के बारे में है. जहां 100 ग्राम अंडों में 173 कैलोरी, मछली में 93 कैलोरी व मुर्गे के गोश्त में 194 कैलोरी प्राप्त होती है, वहीं गेहूं व दालों में 300 कैलोरी, सोयाबीन में 350 कैलोरी व मूंगफली में 550 कैलोरी और मक्खन निकले दूध एवं पनीर से लगभग 350 कैलोरी प्राप्त होती है तो हम यह निर्णय ले सकते हैं कि स्वास्थ्य के लिए क्या चीज जरूरी है? यह स्पष्ट करना भी उचित रहेगा कि अधिक कोलेस्ट्रोल शरीर के लिए लाभदायक नहीं है. 100 ग्राम अंडों में कोलेस्ट्रोल की मात्रा 500 मिलीग्राम है और मुर्गी के गोश्त में 60 है तो वही कोलेस्ट्रोल सभी प्रकार के अन्न, फलों, सब्जियों आदि में शून्य है. अमेरीका के विश्वविख्यात विशेषज्ञ डॉ. माइकेल कलेपर का कहना है कि अंडे का पीला भाग विश्व में कोलेस्ट्रोल एवं जमी चिकनाई का सबसे बड़ा स्रोत है जो स्वास्थ्य के लिए घातक है. उन्होंने यह भी साबित किया है कि जो व्यक्ति मांस या अंडे खाते हैं उनके शरीर में 'रिस्पटरों' की संख्या में कमी हो जाती है जिससे रक्त के अन्दर कोलेस्ट्रोल की मात्रा अधिक हो जाती है. इससे श्दय रोग शुरू हो जाता है और गुर्दे के रोग एवं पथरी जैसी बीमारियों को भी बढ़ावा मिलता है. वास्तविकता यह है कि 1962 में यूनीसेफ ने एक पुस्तक प्रकाशित की तथा अंडों को लोकप्रिय बनाने के लिए अनिषेचित (इनफर्टाइल) अंडों को शाकाहारी अंडे (वेजीटेरियन) जैसा मिथ्या नाम देकर भारत के शाकाहारी समाज में भ्रम फैला दिया. 1971 में मिशिगन यूनिवर्सिटी (अमेरिका) के वैज्ञानिक डॉ. फिलिप जे. स्केन्ट ने यह सिद्ध किया किः अनिषेचित अंडे किसी भी प्रकार से शाकाहारी नहीं होते क्योंकि वे न तो पेड़ों पर उगते हैं और न किसी पौधे पर बल्कि वे सब मुर्गी के पेट में से ही उत्पन्न होते हैं. एक वैज्ञानिक प्रयोग के आधार पर यह देखा गया है कि विद्युत धारा के द्वारा अंडों को आंका जा सकता है. अनिषेचित अंडे में निषेचित अंडे की भांति ही यह विद्युत धारा होती है. यह वैज्ञानिक तथ्य है कि निर्जीव वस्तु में कभी भी विद्युत धारा का अंकन नहीं किया जा सकता. विज्ञान ने यह साबित कर दिया है कि किसी भी प्राणी के जीवन का आधार मात्र लैंगिक प्रजनन क्रिया ही नहीं है बल्कि अलैंगिक प्रजनन के द्वारा भी जीवन हो सकता है जैसे अमीबा और अनेक एककोशीय प्राणी बिना निषेचन क्रिया के उत्पन्न होते रहते हैं. इसी प्रकार से 'टेस्ट ट्यूब बेबी' या उसके द्वारा उत्पन्न प्राणी निर्जीव नहीं गिने जा सकते. सच्चाई यह है कि अंडे दो प्रकार के होते हैं एक वे जिनसे बच्चे निकल सकते हैं तथा दूसरे वे जिनसे बच्चे नहीं निकलते. मुर्गी यदि मुर्गे के संसर्ग में न आए तो भी जवानी में अंडे दे सकती है. इन अंडों की तुलना स्त्री के रजःस्राव से की जा सकती है. जिस प्रकार स्त्री के मासिक धर्म होता है. उसी तरह मुर्गी के भी यह धर्म अंडों के रूप में होता है. यह अंडा मुर्गी की आंतरिक गंदगी का परिणाम है. मुर्गियां जो अंडे देती हैं वे सब अपनी स्वेच्छा से या स्वभावतया नहीं देतीं! बल्कि उन्हें विशिष्ट हार्मोन्स और एग-फर्मयुलेशन के इंजेक्शन दिए जाते हैं. इन इंजेक्शनों के कारण ही मुर्गियां लगातार अंडे दे पाती हैं. अंडे के बाहर आते ही उसे इन्क्यूबेटर (सेटर) में डाल दिया जाता है ताकि उसमें से 21 दिन की जगह 18 दिनों में ही चूजा बाहर आ जाए. मुर्गी का बच्चा जैसे ही अंडे से बाहर निकलता है नर तथा मादा बच्चों को अलग-अलग कर लिया जाता है. मादा बच्चों को शीघ्र जवान करने के लिए एक खास प्रकार की खुराक दी जाती है और इन्हें चैबीसों घंटे तेज प्रकाश में रखकर सोने नहीं दिया जाता ताकि ये दिन रात खा-खा कर जल्दी ही रजःस्राव करने लगें और अंडा देने लायक हो जाएं. अब इन्हें जमीन की जगह तंग पिंजरों में रख दिया जाता है. इन पिंजरों में इतनी अधिक मुर्गियां भर दी जाती हैं कि वे पंख भी नहीं फड़फड़ा सकतीं. तंग जगह के कारण आपस में चोंचें मारती हैं, जख्मी होती हैं, गुस्सा करती हैं व कष्ट भोगती हैं. जब मुर्गी अंडा देती है तो अंडा जाली में से किनारे पड़कर अलग हो जाता है और उसे अपनी अंडे सेने की प्राकृतिक भावना से वंचित रखा जाता है ताकि वह अगला अंडा जल्दी दे. जिंदगी भर पिंजरे में कैद रहने व चल फिर न सकने के कारण उसकी टांगे बेकार हो जाती हैं. जब उसकी उपयोगिता घट जाती है, तो उसे कत्लखाने भेज दिया जाता है. इस प्रकार से प्राप्त अंडे अहिंसक व शाकाहारी कैसे हो सकते हैं?

- ब्रह्म चेलानी, सामरिक चिंतक

मनसा वाचा कर्मणा

यूरोप की नकल क्यों

यह देखना आसान है कि विकास की प्रक्रिया सार्वभौम है और मानवीय विकास को दार्शनिक विचारों की श्रेणी अथवा आचार के नियमों में बांधकर नहीं रखा जा सकता. किसी युग, किसी व्यक्ति, किसी दल को सत्य का एकाधिकार नहीं है. ईसाई, इस्लाम आदि धर्मों के साथ भी यही है. यूनानियों में सौंदर्य-बोध था; उनका जीवन सुंदर था. आधुनिक यूरोप ने उनसे जो एक बात ग्रहण नहीं की, वह है सुंदरता. आप यह नहीं कह सकते कि आधुनिक यूरोप सुंदर है, वस्तुत वह कुरूप है.प्राचीन यूनान के विषय में जो कहा जा सकता है, वही प्राचीन भारत के बारे में भी कहा जा सकता है. उसमें भी सौंदर्य था, जिसका अधिकांश वह खो चुका है. जापान के लोग ही ऐसे हैं, जिनके बारे में कहा जा सकता है कि उन्होंने अपने जीवन में सौंदर्य को बरकरार रखा. पर यूरोपीय प्रभाव में पड़कर वे भी अब उसे तेजी से खो रहे हैं.

यूरोप में मानव मस्तिष्क का जो ह्रास हुआ, वह आश्चर्यजनक है....

हमने 19वीं सदी के अंतिम वर्षों में सोचा था कि मानव मस्तिष्क ने बुद्धि का एक निश्चित स्तर प्राप्त कर लिया है और इसके पहले कि कोई नया विचार स्वीकृति प्राप्त कर सके, उसको संतुष्ट करना होगा. पर ऐसा लगता है कि तनाव का सामना करने के लिए सामान्य बुद्धि पर निर्भर नहीं रहा जा सकता. हम पाते हैं कि नाजी विचार स्वीकार किए जा रहे हैं; पचास वर्ष पहले उनकी स्वीकृति का पूर्वानुमान लगाना असंभव होता. फिर जिस आसानी से बुद्धिजीवी मनोविश्लेषण और फ्रायड के विचारों को स्वीकार करते जा रहे हैं, वह आश्चर्यजनक है. इतिहास के सारे दौर में थोड़े लोग ही मानवता को बचाने के लिए मशाल हाथ में लेते हैं.

- श्री अरविंद

आप की बात

गरिमा गिराने वाला कृत्य

जो कुछ भी संसद में घटा वह बेहद शर्मनाक है और उसकी जितनी निंदा हो वह कम ही होगी. सत्ता पक्ष और विपक्ष में आपस में नोकझोंक और मुद्दों पर असहमति तो सामान्य बात है, लेकिन नौवत धक्का-मुक्की और दो सांसदों के अस्पताल पहुंचने की आ जाएगी वह किसी ने न सोचा था. और दुःख की बात यह है कि जब प्रतिपक्ष नेता राहुल गांधी ने भाजपा सांसद प्रताप सारंगी को घायल अवस्था में देखा तो उनसे हालचाल पूछने और अस्पताल ले जाने के पूछने के वजाय मुंह मोड़ कर वापस चले गए. अहंकार का इससे बड़ा उदहारण और क्या होगा? पहले कांग्रेस ने गृह मंत्री अमित शाह के भाषण को काट-छांट कर दिखाया और यह प्रस्तुत किया की जैसे अमित शाह ने संविधान के जनक बाबा साहब अंबेडकर की आलोचना की और उसके बाद धक्का-मुक्की पर उतर आए. और तो और शाम को जब राहुल गांधी ने प्रेस वार्ता की उसमें भी अदाणी का तो जिक्र करते रहे लेकिन संसद के बाहर हुए घटनाक्रम पर कोई टिप्पणी और दुख जाहिर नहीं किया. संसद की गरिमा बनाए रखने में हर सांसद की भूमिका है और चूंकि राहुल गांधी प्रतिपक्ष के नेता हैं तो उनकी बड़ी भूमिका बनती है.

- बाल गोविंद, ई मेल

विश्व ध्यान दिवस का महत्व

21 दिसम्बर को पहला 'विश्व ध्यान दिवस' मनाया जा रहा है. भारत द्वारा सह प्रायोजित एक मसौदा प्रस्ताव को सर्वसम्मति से स्वीकार करते हुए संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 21 दिसम्बर को 'विश्व ध्यान दिवस' घोषित किया है. विश्व ध्यान दिवस न केवल ध्यान की महत्ता को रेखांकित करता है बल्कि मनुष्य के भीतर शांति, प्रेम और करुणा के विकास का भी प्रतीक है. इस दिवस का मुख्य उद्देश्य ध्यान के महत्व के प्रति जागरूकता पैदा करना और लोगों को इसे जीवन का अभिन्न हिस्सा बनाने के लिए प्रेरित करना है. यह दिन मनुष्य को मानसिक तनाव, चिंता और अन्य नकारात्मक भावनाओं से मुक्ति पाने के लिए ध्यान के अभ्यास की ओर प्रेरित करता है. ध्यान के माध्यम से व्यक्ति अपने संबंधों में सुधार, कार्यक्षमता में वृद्धि और जीवन में संतुलन स्थापित कर सकता है.

- श्वेता

प्रतिदिन अखबार

यह पत्र मालिक, प्रकाशक नानक आहूजा द्वारा देविका वेब प्रिंटर्स, राजापेठ, अमरावती से मुद्रित कर प्रतिदिन अखबार कार्यालय, देविका परिसर, ब्राम्हण सभा के पीछे, दरोगा प्लॉट, राजापेठ, अमरावती 444606 से प्रकाशित किया है. फोन - 0721-2660155/156 E-mail:-pratidinnews @gmail.com प्रतिदिन अखबार में प्रकाशित होनेवाले विभिन्न लेख, पत्र,साहित्य, लेखकों, कवियों आदि के विचारों या तथ्यों पर आधारित होते हैं. इन लेखकों के विचारों अथवा तथ्यों से संपादक की सहमति नहीं है. संपादक पर मात्र सम्पादकीय लेखों का हो दायित्व है. संस्थापक संपादक - नानक आहूजा संपादक - प्रवीण आहूजा